an>

Title: Regarding heavy school bags carried by school children

डॉ. वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़) : अध्यक्ष महोदया, मैं बच्चों के बचपन और उनके कंधों पर किताबों का जो बोझ बढ़ रहा है, उससे संबंधित महत्वपूर्ण विÂाय को आपके सामने उठाना चाहता हूं। देखने में यह आ रहा है कि बच्चों की मासूमियत खत्म हो रही है, उनका बचपन खो रहा है। अवीवा इंडिया कम्पनी के द्वारा दस शहरों में 2250 पैरेंट्स का सर्वे कराया गया, जिसमें 93 परसेंट अभिभावकों ने माना है कि वह जो बचत करते हैं, वह बच्चों की उच्च शिक्षा को ध्यान में रख कर करते हैं। 70 प्रतिशत अभिभावकों की तमन्ना थी कि उनके बच्चे डॉक्टर और इंजीनियर बनें। बच्चों के प्रति यह जो जागरूकता आयी है, यह अच्छी बात है, लेकिन उनकी अव्यवहारिक अपेक्षाएं मासूम बच्चों से उनका बचपन छीन रहा है। जो अभिभावक नहीं कर पाए हैं, वह बच्चों से अपेक्षा कर रहे हैं कि मेरा बेटा या बेटी आगे बढ़े। यह मानसिकता बच्चों के लिए शारीरिक और मानसिक पीढ़ा का सबब बन रही है। कोचिंग, ट्यूशन, होम वर्क इन सबका दबाव इतना अधिक बढ़ रहा है कि यूनाईडिट फोरम द्वारा कुछ स्कूलों में एक अध्ययन कराया गया, उसमें 8-19 वÂान की उम्र के 30 प्रतिशत बच्चे तनाव व अवसाद का शिकार पाए गए हैं और इसके कारण बच्चे अपराध की दुनिया की तरफ बढ़ रहे हैं तथा आत्महत्या जैसे कदम उठा रहे हैं। देश के 85 शहरों के एक लाख से भी अधिक स्कूली बच्चों पर अध्ययन कर के बॉडी इंडेक्स निकाला गया है। इससे जुड़े आंकड़े बताने हैं कि देश में स्कूल जाने वाले 40 प्रतिशत से भी अधिक बच्चे शारीरिक रूप से भी अस्वस्थ हैं। महानगरों के बच्चे आज स्कूली होमवर्क की अधिकता और कम शारीरिक व्यायाम की समस्या से जूझ रहे हैं। इससे भविÂय में अस्वस्थ किशोरों की संख्या में वृद्धि का डर बना रहेगा।

महोदया, मोबाइल, इंटरनेट, व्हाट्एप व फेसबुक के साथ बच्चे अपने मनोरंजन की बहुत सी जरूरतें पूरी कर लेते हैं पर इससे वे शारीरिक श्रम से जुड़ी गतिविधियों से दूर होने के कारण मोटापा, गर्दन व जोड़ों के दर्द, लीवर में सूजन, चिंता, निराशा व आंखों में बहुत जल्दी चश्मा लगने जैसी बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। यह एक राÂट्रीय चिंता का विÂाय है। खेल के मैदानों से बच्चों की किलकारियां खत्म हो रही हैं। फरीदाबाद के सैक्टर 11डी स्थित डीपीएस में बच्चों के बढ़ते बोझ को कम करने के लिए नई तकनीक का साहारा लिया गया है। 9 अप्रैल से यह प्रयोग शुरू हो चुका है। सैशन में बच्चे अपने बैग में एक टैबलेट लेकर आएंगे। इसमें रिकॉर्ड सभी विÂाय होंगे। इसके साथ केवल चार कॉपी बैग में ले कर आना होंगी। नर्सरी से 12वीं तक के छात्रों को बढ़ते बैग के बोझ से मुक्ति देने के लिए यह कदम उठाया गया है। इतना ही नहीं अभिभावक घर से स्कूल जाते समय और कैंपस में अपने बच्चों की गतिविधियों पर पल-पल नजर रख सकेंगे। इसके लिए भी अलग से अभिभावकों के लिए मोबाइल एप भी तैयार किया गया है। इसके द्वारा बच्चों की पढ़ाई नई तकनीक से होगी। इसमें पश्चिम व पूर्व की शिक्षा संस्कृति की झलक मिलेगी। सीबीएससी बेस्ड पढ़ाई होगी। यह एक बहुत अच्छा प्रयोग उस स्कूल में किया गया है। इसी तरह कुछ स्कूलों में बच्चों का होमवर्क स्कूलों में ही कराने की परंपरा शुरू की है ताकि बच्चे अपना बस्ता घर न ले जाएं। मैं अनुरोध करना चाहता हूँ कि हमारी जो शिक्षा होनी चाहिए, उसमें बच्चों का शारीरिक और बौद्धिकि विकास होना चाहिए। उसमें शिक्षा भी हो, खेल भी, कविता भी हो, गीत भी हो, कहानी भी हो और इसके लिए योगाचार्यों, मनोवैज्ञानिकों, बाल विशेÂाज्ञों, शिक्षाविदों और समाजशास्त्रियों का सहयोग लेकर स्कूली शिक्षा को व्यावहारिक एवं ज्ञानवर्धक बनाने की योजना क्रियान्वित करने की आवश्यकता है।

माननीय अध्यक्ष : श्री भैरों प्रसाद मिश्र, श्री निशिकान्त दुबे, डॉ. मनोज राजोरिया, श्रीमती रीती पाठक, श्रीमती संतोÂा अहलावत, श्री पी.पी.चौधरी को डॉ. वीरेन्द्र कुमार द्वारा उठाए गए विÂाय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।